अहले सुन्नत कि पहचान

सुन्निओ के अक़ाइद कि पहचान में बीस (20) उमूर

امور عشرین در امتیاز عقائد سنیین

मुसन्निफ

इमाम अहमद रज़ा खान फाज़िले बरेलवी

हिंदी

अरशद अली रज़वी

नूरी महफिल ठिरिया निजावत खान

बरेली शरीफ

8755455926

उमूर ए इशरीन दर इमतियाज़े अक़ाइद ए सुन्निईन

(सुन्निओ के अक़ाइद कि पहचान में बीस (20) उमूर)

मुसन्निफ

इमाम अहमद रज़ा खान फाज़िले बरेलवी

रदिअल्लाहो अन्हो

हिंदी

अरशद अली रज़वी

नाशिर

नूरी महफिल ठिरिया निजावत खान

बरेली शरीफ

8755455926

सुन्निओ के अक़ाइद की पहचान में बीस (20) उमूर

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيم

तमाम तारीफें अल्लाह ﷻ के लिये हैं जो इंसानो और जिन्नो का रब है। और दुरूद ओ सलाम हों हमारे अज़मत वा अहसान वाले नबी ﷺ पर जो जहन्नम से बचाने और जन्नत अता फरमाने वाला है , जिसका ज़िक्र हिफाज़त और उसकि मुहब्बत ढाल है और आप कि आल पर और असहाब पर और अहले सुन्नत पर।

माहे रमज़ानुल मुबारक 1318 हि. में फक़ीर के पास साम्भर इलाक़ा रियासत जयपुर (राजस्थान) से आया जिसका खुलासा नीचे है।

नक़ल नामा हफिज़ मुहम्मद उसमान साहब बनाम फक़ीर(आला हज़रत अलैहिर्रहमा)।

बखिदमत फैज़ दरजत मौलाना अहमद रज़ा खान साहब बरेलवी मुहद्दिस वा इमाम अहले सुन्नत वा जमा'अत बाद सलाम सुन्नत अस्सालाम के अर्ज़े खिदमत है के -

आज कल हमारे मुल्क मारवाड की बडी खुशक़िस्मती है के आज कल यहाँ साम्भर में जनाब मौलाना मौलवी अहमद अली शाह साहब हनफी नक़्शबंदी ओवैसी तशरीफ लाये हैं हम लोग इनकी तसनीफात गो ना गो(विभिन्न किताबें) से मुसताफीज़ हो चुके थे अब खुश बयानी असर पिन्हानी(छुपा हुआ) व तवज्जो क़लबी से फैज़याब हो रहे हैं . गैर मुक़ल्लिद वा दीगर अक़ाइद ए बातिला वाले तौबा करते ब'अज़ से उठते हैं कोइ खुत्बा ऐसा नहीं होता जिसमे ये नदवा(यानि सुलेहकुल्ली इल्हाद) कि बुराई बयान ना करते हों यहा के लोग नदवे के बडे सनाख्वन थे अब ऐसे मुतनफ्फर(disgust) हो गये हैं जैसे किसी खबीस जिन से कोइ मुत्नफ्फर होता है। एक मौलवी नदवी भी यहां आ गया है वो कहता है कि अगर मौलवी

अहमद अली शाह साहब मुखालिफ(नदवा के) हैं तो खुद जाहिल वा बद्दीन हैं चंद लोग इसके कहने से बहक गये वो कहते हैं कि अगर मौलवी अहमद रज़ा खान साहब बरेलवी , मौलवी अहमद अली शाह साहब के मुत'अल्लिक़ लिख दें तो हम इनकी बात सुनेंगे और अपने ख्यालात से तौबा करेंगे लेहाज़ा अर्ज़े खिदमत है के मौलवी अहमद अली शाह साहब आपके इल्म में जैसे हों लिख दिजिये आपकी ये तहरीर सरकशों के लिये बहुत मुफीद होगी.

अब्दे मुहम्मद उसमान

(सय्येदना इमाम अहमद रज़ा तहरीर फरमाते हैं) फक़ीर को इस से पहले मौलाना मौसूफ से त'अर्रुफ तफसीली ना था और अम्र शाहादत खुसुसन अक़ाइद के बारे में अहम वा आज़म लिहाज़ा जवाब में ये खत इर्साल फरमाया (मक्तूब ए आला हज़रत)

नामा फक़ीर(आला हज़रत) बनाम हाफिज़(मुहम्मद उसमान) साहब

बा मुलाहिज़ा करम फरमां हाफिज़ मुहम्मद उस्मान साहब ज़ीदा लुत्फुम अस्सलाम ओ अल्य्कुम वा रह्मतुल्लाह वा बरकातहु लुत्फ नामा आया ममनु याद आवरी फरमाया मौलवी अहमद अली शाह साहब ने गरीब खाना पर करम फरमाया था,पहली मुलाक़ात थी बाद जलसा अज़ीमाबाद(पट्ना बिहार) न्याज़ हासिल हुआ और इस से भी मुजमल था कि सिवाये सलाम वा मुसाहफा के किसी मुकाल्मे(बात चीत) की नौबत ना आइ। अम्रे शाहादत अज़ीम है मैं म'आज़ अल्लाह कोइ सुए ज़न नही करता बल्कि मौलाना मौसूफ के जिन फज़ाएल को अब इज्मालन वा सामाअन (बा ज़रीया हाफिज़ साहब मज़्कूर) जानता हुं तफसीलन वा अयानन जान लुं। मौलाना की हक़ पसंदी से उम्मीद है के फक़ीर की इस अर्ज़ पर कमाल खुश वा मसरुर,आज कल गैर मुक़ल्लिदीन या नदवे ही का फितना हिंदुस्तान में सारी नहीं बल्के म'अज़ अल्लाह सदहा आफतें हैं फक़ीर बीस(20) उमूर हाज़िर करता है मौलाना मौसूफ इन

पर अपनी तसदीक़ काफी वा वाफी जिस से बा-कुशादा पेशानी तसलीम कामिल रोशन तौर पर सबित हों तहरीर फरमा कर अपनी मोहर से मुज़य्यन फरमा कर फक़ीर के पास रवाना कर दें.

फक़ीर अहमद रज़ा क़ादरी अफी अनहु

अज़ बरेली 27 रमज़ान उल मुबारक 1318 हि.

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيم

उमूर ए अशरीन तसदीक़ तलब अज़ जनाब मौलाना मौलवी अहमद अली शाह साहब मिर्ज़ापुरी.

1- सय्यद अहमद खान अलीगढी और उसके मुतब्य्येन सब काफिर हैं।

2- राफ्ज़ी के क़ुर'आन करीम को नाक़िस कहे या मौला अली कर्रामल्लहो वजहा या किसी गैर ए नबी को पिछले अम्बिया में से किसी से अफज़ल बताये काफिर वा मुरतद है।

3- राफज़ी तबर्राई फुक़्हा के नज़दीक़ काफिर है और इसके गुमराह बिद'अती जहन्नमी होने पर इज्मा है।

4- जो मौला अली रदिअल्लहो अन्हो को हज़रात शैखैन रदिअल्लाहो अन्हुमा पर क़ुर्बे इलाही में तफ्ज़ील दे वो गुमराह वा मुखालिफे सुन्नत है।

5- जंगे जुमल वा सिफ्फीन में हक़ बदस्ते हक़ परस्त अमीर उल मोमिनीन मौला अली था मगर हज़राते सहाबा इकराम मुखाल्फीन कि खता खता ए इजतेहादी थी जिस कि वजह से इन पर त'अन सख्त हराम , इनकी निसबत कोइ कलमा इस से ज़ाईद गुस्ताखी का निकालना बेशक़ रिफ्ज़ है और खुरूज अज़ दईरा अहले सुन्नत , कोइ किसी सहाबी की शान मे कलमा ए त'अन वा तौहीन कहे उन्हे बुरा जाने , फासिक़ जाने उनमें से किसी से बुग्ज़ रखे मुतलाक़न राफ्ज़ी है।

6- सदहा साल से दर्जाए इज्तेहाद ए मुतलक़ तक कोइ वासिल नहीं है बे वसूल ए दर्जाए इज्तेहाद तक़्लीद फर्ज़, गैर मुक़ल्लिदीन गुमराह वा बद्दीन हैं।

7- अहले सुन्नत सदहा साल से चार गिरोह(हनफी,शाफई,मलिकी,हम्बली) मे मुन्हासिर हैं जो इनसे खारिज है बिद'अती नारी है।

8- वहाबीओ का मुअल्लिम ए अव्वल इब्ने अबदुल वहाव नजदी और मुअल्लिम ए सानी इस्माईल देहलवी मुसन्निफ तक़्वियतुल ईमान दोनो सख्त गुमराह बद्दीन थे।

9- तक़वियातुल ईमान वा सिराते मुस्ताक़ीम वा रिसाला यक रोज़ी वा तंवीर उल ऐनएन तसानीफ इस्माईल देहलवी सरीह ज़लालतों गुमराहीयो और कलिमाते कुफ्र पर मुशतामिल हैं।

10- माइता मसाएल मौलवी इसहाक़ देहलवी गलत वा मरदूद मसाएल वा मुखालफते अहले सुन्नत वा मुखाल्फते जम्हूर से पुर हैं।

11- अम्बिया अलैहिस्सलाम और औलिया से मदद और इसतेअनत और उन्हे वा वक़्ते हाजत तवस्सुल वा इस्तेम्दाद के लिये निदा करना या रसूल अल्लाह , या अली, या शैख अब्दुल क़ादिर जीलानी कहना और उन्हे वासता फैज़ ए इलाही जानना ज़रूर हक़ वा जएज़ है।

12- आलम मे अम्बिया अलैहिस्सलाम और औलिया का तसर्रुफ हयाते दुनियवी में और बाद विसाल भी ब-अताए इलाही जारी और क़ियामत तक उनका दरीया ए फैज़ मोज्ज़न रहेगा।

13- आम अम्वात(मुर्दे) अहया(ज़िंदा) को देखते इनके कलाम सुनते समझते हैं ,सिमाए मौता हक़ है फिर औलिया कि शान तो अरफ'अ वा अ'अला है।

14- अल्लाह अज़्ज़ वा जल्ल ने रोज़े अव्वल से क़ियामत तक के तमाम मा काना वा मा या कून एक एक ज़र्रे का हाल अपने हबीबे अकरम सल्लल्लाहो वा आलेहि वा साहबेही वसल्लम को बता दिया हुज़ूर का इल्म इन तमाम गैबों को मुहीत है।

15- इम्काने किज़्ब ए इलाही जैसा के इस्माईल देह्लवी ने रिसाला यकरोज़ी और अब गंगोही ने बराहीन ए क़ातेआ मे माना सरीह ज़लालत है। अल्लाह त'अला का किज़्ब क़त'अन इज्मा'अन मुहाल बिल्ज़ात है मस'अला खल्फे वईद को इन के इस नापाक खयाल से असलन कोइ इलाक़ा नहीं।

16- शैतान के इल्म को म'आज़ अल्लाह हुज़ूर सय्यदे आलम के इल्म से ज़येद वा वसी-तर मानना जैसा के बराहीन ए क़ातेआ गंगोही में है सरीह ज़लालत वा तौहीन हज़रते रिसालत अलैहि अफ्ज़ल उ सलात वा तहियात है।

17- मजलिस ए मिलाद ए मुबारक और इस मे क़ियाम ताज़ीमी जिस तरह सदहा साल से हरमैन मुहतरमैन में शाये वअ ज़ाये है जाएज़ है।

18- ग्यारहवी शरीफ की न्याज़ और अम्वात कि फातेहा और उर्से औलिया के मज़ामीर वगैराह मुंकिरात से खाली हो जाएज़ वा मंदोब(सराहनीये) है।

19- शारियत वा तरीक़त दो अलग - अलग नहीं हैं , बे इत्तेबा ए शर'अ वसुल इलल्लाह ना मुम्किन ,कोइ कैसे ही मर्तबा ए आलिया तक पहुंचे जब तक अक़्ल बाक़ी है अहकामे इलाहीया इस पर से साक़ित नहीं हो सकते, झूटे सूफी के मुखालिफ शर'अ में अपना कमाल समझते हैं सब गुमराह मसखरगाने शैतान हैं ,वह्दते वजूद हक़ है और हुलूल इत्तेहाद के आज कल के बाज़ झूटे सूफी बकते हैं कुफ्र है।

20- नदवा सरमाया ए ज़लालत और मजमुआ ए बिद'अत है गुमराहो से मेल जोल इत्तेहाद हराम है इनकि ताज़ीम मुजिबे गज़ब ए इलाही और इनके रद्द का इंसेदाद ल'अनत ए इलाही कि तरफ बुलाना , इन्हें दीनी मज्लिस का रुक्न बनाना दीन को ढाना है , नदवा के लेक्चरों और रुएदाद में वो बातें भरी हैं जिन से अल्लाह वा रसूल बरी हैं जल्ला जलाला हु वा सल्लल्ला हो अलैहे वसल्लम,अल्लाह त'अला सब बद-मज़्हबों वा गुमराहों से पनाह दे और सुन्नते हक़्क़ा खालिस पर सबित क़दम रखे।

हज़रत फज़िलए बरेलवी मद्दा ज़िल्ला उल आली के इन उमूरे मुक़र्र्रा मज़्कूरा की तसदीक़ जनाब मौलाना शाह अहमद अली साहब मिर्ज़ापुरी ने फरमायी और ये इबारत लिखी-

"उमूर ए अशरीन मुंदर्ज़ा बाला बहुत दुरुस्त वा ठीक हैं – वहदते वुजूद हक़ है मगर इसमे बहस वा मुबाहसा फक़ीर के नज़दीक़ खूब नहीं। ये उमूर कशफिया से हैं और मुत'अल्लिक़ बकैफियत ऐसे उमूर को औलिया अल्लाह ही खूब समझे हुए हैं चुंके फक़ीर के पास मुहर नहीं लिहाज़ा दस्तखत पर ही इक्तेफा किया"।

2 शव्वाल 1318 हि. रोज़ चार शाम्बा

फिर इमामे अहले सुन्नत फज़िले बरेलवी ने ये तहरीर फरमा कर अपने दस्तखत और मुहर सब्त फरमायी -

"आज कल बहुत लोग अद'अ ए सुन्नियत करते हैं और अवाम बेचारे धोके में पडते हैं बाज़ मसलेहते वक़्त के लिये ज़बान से कुछ कह जाते हैं और मौक़ा पाकर फिर पलटा खाते हैं , अकसर जगह इम्तेहान के लिये इन शा अल्लाह उमूरे अशरीन बतौरे नमूना काफी हैं जो ब-

औनेही त'आला फराज़े सुन्नियत पर सच्चा फाइज़ है बे तकल्लुफ दस्तखत कर देगा वरना पानी मरना अपने आप ही नशेबे ज़लालत कि खबर देगा।

और जिसने अहद तोडा तो इस अहद तोडने का वबाल उसी पर पडेगा (क़ुर'आन-48:10)

,और जो उलटे पाओं फिरेगा अल्लाह का कुछ नुक़सान ना करेगा (*क़ुर'आन- 3: 144)*

और जो मुहं फेरे तो बेशक़ अल्लाह ही बे नियाज़ है ,सब खुबीयों सराहा , (क़ुर'आन-57:24)

और तमाम तारीफें रब्बुल आलामीन के लिये हैं

अब्दुल मुसतफा अहमद रज़ा खान क़ादरी बरेलवी